Roll No. : .... Total Pages : 7

3641-P

B.A. IIIrd Year (Private) Examination, 2016

SANSKRIT

Paper – I

(वैदिक व लौकिक काव्य एवं गद्य)

Time : Three Hours
Maximum Marks : 100

PART–A [Marks : 20]

(खण्ड-अ)

Answer all questions (50 words each).
All questions carry equal marks.
सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 50 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART–B [Marks : 50]

(खण्ड-ब)

Answer *five* questions (250 words each). Select *one* question from each unit. All questions carry equal marks.
प्रत्येक इकाई से **एक-एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल **पाँच** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART–C [Marks : 30]

(खण्ड-स)

Answer any *two* questions (300 words each).
All questions carry equal marks.
कोई **दो** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड–अ

(इकाई–I)

1. (i) [illegible] सूक्त के ऋषि एवं सूक्त [illegible] का नाम बताइये।

(ii) [illegible]पति सूक्त के ऋषि एवं सूक्त [illegible] छन्द का नामोल्लेख कीजिये।

(इकाई–II)

(iii) नचिकेता को तीन दिन तक भूखा-प्यासा क्यों रहना पड़ा?

(iv) नचिकेता ने प्रथम 'वरदान' के रूप में यमराज से क्या माँगा?

(इकाई–III)

(v) राजा युधिष्ठिर ने गुप्तचर के रूप में किसे भेजा और क्यों?

(vi) "हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः" उक्ति किसने कही और किससे कही?

(इकाई–IV)

(vii) राजा युधिष्ठिर को युद्ध के लिये किसने प्रेरित किया और क्यों?

[illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] कैसा [illegible]
[illegible]

(इकाई-V)

[illegible] '[illegible]' में किसे उपदेश [illegible] गया है और क्यों?

[illegible] [illegible] का उपदेश किसे पीड़ा देने वाला होता है और कैसे?

खण्ड-ब

(इकाई–I)

2. निम्नलिखित मन्त्रों में से किन्हीं **दो** की व्याख्या कीजिए :

(क) यस्य त्री पूर्णा मधुना पदान्यक्षीयमाणा स्वधया मदन्ति।
य उ त्रिधातु पृथिवीमुत द्यामेको दाधार भुवनानि विश्वा।।

(ख) यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद् यः पर्वतान् प्रकुपिताँ अरम्णात्।
यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो यो द्यामस्तभ्नात् स जनास इन्द्रः।।

(ग) मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति य प्राणिति य ईं श्रृणोत्युक्तम्।
अमन्तवो यां त उप क्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि।।

(घ) एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।

(इकाई–II)

3. निम्नलिखित मन्त्रों में से किन्हीं **दो** की व्याख्या कीजिए :

(क) आशा प्रतीक्षे सङ्गतं सूनृताम् च

इष्टापूर्ते पुत्र-पशूँश्च सर्वान्।

एतद वृङक्ते पुरुषस्याल्पमेधसो

यस्यानश्नन् वसति ब्राह्मणो गृहे।।

(ख) त्रिणाचिकेतस्त्रयमेतद्विदित्वा

च एवं विद्वाँश्चिनुते नाचिकेतम्।

स मृत्युपाशान्तुरतः प्रणोद्य

शोकातिको मोदते स्वर्गलोके।।

(ग) दूरमेते विपरीते विषूची

अविद्या या च विद्येति ज्ञाता।

विद्याभीप्सिनं नचिकेतसं मन्ये

न त्वा कामा बहवोऽलोलुपन्त।।

(घ) तं दुर्दर्शं गूढमनुप्रविष्टं

गुहाहितं गह्वरेष्ठं पुराणम्।

अध्यात्मयोगाधिगमेन देवं

मत्वा धीरो हर्षशोकौ जहाति।।

(इकाई–III)

4. निम्नलिखित श्लोक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपं
हितान्न यः संश्रृणुते स किंप्रभुः।
सदाऽनुकूलेषु हि कुर्वते रतिं
नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः।।

अथवा

(ख) कथाप्रसङ्गेन जनैरुदाहृतादनुस्मृतारवण्डलसूनुविक्रमः।
तवाभिधानाद्व्यथते नताननः स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः।।

(इकाई–IV)

5. निम्नलिखित पद्य की संस्कृत में व्याख्या कीजिए :

(क) भवन्तमेतर्हि मनस्विगर्हिते विवर्तमानं नरदेव वर्त्मनि।
कथं न मन्युर्ज्वलयत्युदीरितः शयीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः

अथवा

(ख) विहाय शान्ति नृप धाम तत्पुनः प्रसीद
सन्धेहि वधाय विद्विषाम्।
व्रजन्ति शत्रूनवधूय निस्पृहा शमेन
सिद्धि मुनयो न भूभृतः।।

(इकाई–V)

6. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) तात चन्द्रापीड, विदित वेदितव्यस्याधीत सर्वशास्त्रस्य ते नाल्पम-प्युपदेष्टव्यमस्ति। केवलं च निसर्गत एवाभानु-भेद्यमरत्नालो - कोच्छेद्यमप्रदीप प्रभापनेयमतिगहनं तमो यौवनप्रभवम्। अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः। कष्टमनञ्जनवर्तिसाध्य मपरमैश्वर्यतिमिरान्धत्वम्। अशिशिरोपचार-हार्योऽतितीव्रो दर्पदाहज्वरोष्मा सततममूलमन्त्रगम्यो विषयो विषयविषास्वादमोहः। नित्यमस्नानशौचबध्यो रागमलावलेपः।

अथवा

(ख) कामं भवान्प्रकृत्यैव धीरः, पित्रा च समारोपितसंस्कारः, तरलहृदयमप्रतिबुद्धं च मदयन्ति धनानि तथापि भवदगुण-संतोषो मायेवं मुखरीकृतवान्। इदमेवं च पुनः पुनरभिधीयसे। विद्वांसमीप सचेतनमपि महासत्वमप्यभिजातमपि धीरमपि प्रयत्नवन्तमपि षुरुषमियं दुर्विनीता खलीकरोति लक्ष्यीरिति। सर्वथा कल्याणैः पित्रा क्रियमाणमनुभवतु भवान् नवयौव-राज्याभिषेकमङ्गलम्। कुलक्रमागतामुद्वह पूर्वषरुषैरूढां पुरम्। अवमनय द्विषतां शिरांसि। उन्नमयं स्वबन्धुवर्गम्।

खण्ड-स

(इकाई–I)

7. प्रजापति देवता का स्वरूप वर्णन कीजिए।

(इकाई–II)

8. कठोपनिषद् के आधार पर यमराज द्वारा नचिकेता को प्रदत्त वरदानों का वर्णन कीजिए।

(इकाई–III)

9. 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथम सर्ग की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए।

(इकाई–IV)

10. 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथम सर्ग के आधार पर दुर्योधन का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(इकाई–V)

11. 'शुकनासोपदेश' के आधार पर लक्ष्मी का स्वरूप वर्णन कीजिए।